ARYAVART SHODH VIKAS PATRIKA
RNI TITLED NO. UPBBIL04292
RNI REG. NO. UPBBIL/2014/66218 PP. NO.- 149-151
ISSN NO.-2347-2944
Vol.-9, No.-II, Issues-10 YEAR- Dec -2018

एम0एन0 रॉय का वैज्ञानिक दृष्टिकोण एवं नव मानववाद

डॉ0 अरुण कुमार तिवारी
एसोसिएट प्रोफेसर– राजनीति विज्ञान विभाग, मुनीश्वर दत्त स्नातकोत्तर महाविद्यालय, प्रतापगढ़ (उ0प्र0), भारत

Received- 20.11.2018, Revised- 23.11.2018, Accepted - 26.12.2018 E-mail: draktiwaripbh@gmail.com

सारांश : *प्रस्तुत शोध–पत्र में मैंने यह देखने का प्रयास किया है कि किस तरह मार्क्सवादी चिन्तन से प्रभावित होकर मानवेन्द्र नाथ रॉय ने राजनीति को वैज्ञानिक आधार देने का पूरा प्रयास किया। किन्तु कुछ समय बाद उनका मन मार्क्सवाद से टूट गया और वे एक अलग विचार की ओर अग्रसर हुए जिसे 'नव मानववाद' के नाम से जाना जाता है। मैंने यह भी समझने का प्रयास किया है कि किस तरह उनका मानववाद परम्परागत मानववाद से भिन्न है और इसीलिए उसे नव मानववाद कहा जाता है। एम0एन0रॉय का राजनीतिक दर्शन पूरी तरह वैज्ञानिक चिन्तन पर आधारित दिखाई देता है। रॉय ने वैज्ञानिक दृष्टिकोण को ध्यान में रखकर अध्यात्मवाद के स्थान पर भौतिकवाद एवं समाजवाद को महत्व दिया। उनके अनुसार अध्यात्म तथा धर्म मानव को वैज्ञानिक दृष्टिकोण एवं चिन्तन से विमुख करते हैं। जब से पुर्नजागरण काल में धर्म को सीमित कर वैज्ञानिक चिन्तन का प्रारम्भ हुआ तभी से मानव एवं उसकी स्वतन्त्रता का उचित वातावरण तैयार हुआ। धर्म ने एक लम्बे समय तक मानव मस्तिश्क को नियन्त्रित किया और उसे अन्ध विश्वासों एवं धार्मिक आडम्बरों में फंसाये रखा। उन्होंने कहा कि यद्यपि कई धर्मो ने सामाजिक क्रान्ति में अपना विशेष योगदान किया है किन्तु उसके अनुयायियों ने धर्म के नाम पर शोषण करने का प्रयास किया जो पूरी तरह अनुचित और अवैज्ञानिक है।*

कुंजीभूत शब्द–मार्क्सवादी चिन्तन, प्रभावित, राजनीति, वैज्ञानिक आधार, प्रयास, विचार, अग्रसर, मानववाद।

उन्होंने अपनी वैज्ञानिक दृष्टि को ध्यान में रखते हुए धर्म द्वारा किये गये लोकहितकारी कार्यो की सराहना भी की। उनके अनुसार धर्म का शिक्षा के क्षेत्र में विशेष योगदान रहा है जिसको खुले मस्तिष्क से स्वीकार किया जाना चाहिए। शिक्षण संस्थाओं का निर्माण एवं उसके द्वारा शिक्षा, ज्ञान तथा जागरण आदि में धर्म के योगदान को स्वीकार किया जाना चाहिए। शिक्षा के माध्यम से ज्ञान, विवेक, जिज्ञासा एवं उत्सुकता का जो जन्म हुआ उसके पीछे धर्म का उचित प्रयास भी सराहनीय है। इसके विपरीत धर्म ने आर्थिक क्षेत्र में जो एकाधिकार स्थापित किया, भारी मात्रा में जमीन एवं सम्पत्ति जुटाने का जो कार्य किया वह केवल जन शोषण कहा जायेगा। धार्मिक सम्प्रदायों के आर्थिक वैभव के सामने जन साधारण को झुकना पड़ा जो पूरी तरह अनुचित है। धर्म ने लोगों के तर्क–वितर्क की षक्ति, चिन्तन तथा मानव मस्तिष्क को कुण्ठित करने का जो काम किया वह भी वैज्ञानिक चिन्तन के विपरीत है। स्वर्ग–नरक की परिकल्पना का भी कोई वैज्ञानिक आधार नहीं है। मानवेन्द्र नाथ रॉय के अनुसार विज्ञान के विकास ने ब्रह्माण्ड के विशय में नवीन दृष्टिकोण प्रस्तुत किया और विज्ञान के अनेक तत्वों ने ज्ञान की असीमित वृद्धि में अपना योगदान किया। भौतिकवाद के बढ़ते हुए प्रभाव ने धार्मिक एकाधिकार को समाप्त करने का कार्य किया। सामाजिक व्यवहार में परिवर्तन आया तथा धर्म द्वारा पैदा किये गये तर्कहीनता एवं निराशावाद को शिथिल किया। मानव में आत्मविश्वास, विवेक एवं आशावाद को बल मिला। इस प्रकार धर्म से मुक्ति का वैज्ञानिक कारण बताते हुए रॉय ने उसमें सुधार नहीं अपितु उसे समाप्त करने का समर्थन किया। उन्होंने मानवीय चिन्तन को धर्म एवं अध्यात्म से मुक्त कर एक स्वतन्त्र चेतना की स्थापना की।

अपने वैज्ञानिक दृष्टिकोण के ही कारण एम0एन0रॉय भौतिकवादी चिन्तन के समर्थक हो गये। उनका भौतिकवाद 'खाओ पियो और मौज करो' वाले चिन्तन का समर्थन नहीं करता है। "भौतिकवाद प्रकृति के यथार्थ ज्ञान का प्रतिनिधित्व करता है तथा प्रकृति से मानव का तादात्म्य स्थापित करता है। प्रकृति व्यक्तिगत प्रसन्नता एवं स्वाभिमान का भी परिचायक है।" रॉय ने दिदरो के विचार को अपने भौतिकवादी चिन्तन का आधार माना। उनका मत है कि दिदरों का यह विचार कि मानव बन्धनमुक्त है तथा व्यक्ति को अपनी स्वतन्त्रता की रक्षा का पूर्ण अधिकार है, मेरे भौतिकवाद का आधार स्तम्भ है। अपने वैज्ञानिक दृष्टिकोण के लिए वे प्रसिद्ध चिन्तक हेराक्लाइटस से भी प्रभावित थे। उनके अनुसार "हेराक्लाइटस के द्वन्द्वात्मकता की विचारधारा ने सम्पूर्ण सत्य तथा सम्पूर्ण ज्ञान को चुनौती देकर मानव मस्तिश्क को सभी बन्धनों से

I S S N N O . - 2 3 4 7 - 2 9 4 4
Vol.-9, No.-II, Issues-10 YEAR- Dec -2018

मुक्त कर दिया। जो मानव मस्तिष्क से परे है, वह सत्य नहीं अपितु केवल स्वप्न है। वह ज्ञान नहीं अपितु केवल भ्रम है। कल्पना नहीं अपितु केवल इन्द्रियजन्य अनुभव ही सत्य है"। हेराक्लाइटस के अलावा ग्रीक विचारक एनेक्सागोरस, प्रोटागोरस तथा थेल्स आदि से अत्यधिक प्रभावित होकर मानवेन्द्र नाथ यथार्थवाद और वैज्ञानिक दृष्टिकोण की ओर अग्रसर हुए।

प्रसिद्ध विचारक प्रोटागोरस का यह विचार कि 'मनुष्य ही सभी वस्तुओं का मापदण्ड है', मानवेन्द्र नाथ रॉय के लिए सर्वाधिक प्रेरणास्त्रोत था। उन्होंने हॉब्स की धर्म निरपेक्ष राजनीति एवं विवेक के समन्वय का विचार आत्मसात किया। इसी तरह रॉय ने भारतीय उपनिषदों के भौतिकवादी अंशों का उल्लेख किया तथा कपिल ऋषि एवं कणाद के विचारों में भी भौतिकवाद के दर्शन किये। रॉय राजनीति में नैतिकता को स्थान नहीं देना चाहते थे, किन्तु उन्हें मैकियावेली का समर्थक नहीं कहा जा सकता है। रॉय एक सत्यवादी चिन्तक थे तथा मैकियावेली के विपरीत अपने भौतिकवादी दर्शन में मानवीय कोमल भावनाओं को जीवित रखा। स्वार्थपरता का त्याग कर उन्होंने आर्थिक मानव के स्थान पर नैतिक मानव को प्रतिष्ठित किया। भौतिकवाद आदर्शवादी ज्ञानशास्त्र से रहित नहीं हो सकता। समस्त विचारों का सम्बन्ध भौतिक अस्तित्व से है। इस प्रकार रॉय का भौतिकवाद यथार्थ पर आधारित है। अपने भौतिकवादी दर्शन पर वे मार्क्स, हीगल और एंजिल्स का भी प्रभाव मानते हैं।

भौतिकवादी यथार्थवादी होने के कारण ही एम0एन0 रॉय समाजवाद की ओर अग्रसर हुए। वे पूँजीवाद के घोर विरोधी थे। उनके अनुसार सामाजिक दासता, सांस्कृतिक पिछड़ापन, आर्थिक शोषण एवं आध्यात्मिक गिरावट से मुक्ति के लिए समाजवाद से बड़ा और कोई विचार एवं सिद्धांत नहीं है। कुछ समय पश्चात् रॉय का मन समाजवाद से विमुख होने लगा। वे मानने लगे कि मनुष्य केवल पेट भर भोजन के लिए जीवित नहीं रहता। साधन और साध्य में अटूट सम्बन्ध होता है। अतः अब समाजवाद या साम्यवाद नहीं अपितु 'सहकारी समाजवाद' को बढ़ावा दिया जाना चाहिए। उनके अनुसार सहकारी समाजवाद में व्यक्ति को एक स्वतन्त्र इकाई के रूप में स्वीकार किया जायेगा तथा न तो व्यक्ति पर नियंत्रण रहेगा और न ही उसकी स्वतंत्रता सीमित की जायेगी। यह एक ऐसा सामाजिक दर्शन होगा जिसमें केवल आर्थिक उपलब्धि ही सब कुछ नहीं होगी अपितु मानव का सर्वांगीण विकास एवं कल्याण ही इसका लक्ष्य होगा। इस प्रकार मानवेन्द्र नाथ रॉय अपने भौतिकवादी चिन्तन से आगे बढ़कर मानववाद की ओर अग्रसर हुए।

एम0एन0 राय के राजनीतिक चिन्तन में मानव को ही केन्द्र में रखा गया है। इसलिए उनके चिन्तन को मानववाद पर आधारित किया जाता है किन्तु उन्होंने परम्परागत मानववादी चिन्तन से हटकर उसको एक नया आयाम देने का प्रयास किया, इसलिए उनके मानववाद को 'नव मानववाद' के नाम से जाना जाता है। प्राचीन काल से ही मानववादी विचारधारा का केन्द्र–बिन्दु मानव रहा है। मनुष्य ही सब कार्यों का आधार है तथा मनुष्य सर्वश्रेष्ठ है। भारत में भी चारवाक तथा बौद्ध दर्शन में मानववाद के लक्षण दिखाई देते हैं। यूरोपीय पुर्नजागरण ने मानववाद को वैज्ञानिक आधार प्रदान किया जिससे ईश्वर की प्रमुखता कम हुई तथा मानव का महत्व बढ़ा। मानववाद ने ही ईश्वर की सत्ता के स्थान पर मानव की सत्ता स्थापित की। मानववादी चिन्तन की वजह से ही विवेकपूर्ण, मानवीय और वैज्ञानिक विचारों को बल मिला। दार्शनिक चिन्तन का केन्द्र बिन्दु ईश्वर की प्राप्ति एवं स्वर्ग–नरक न होकर मानव बना। आधुनिक युग में यथार्थवाद, अस्तित्ववाद एवं मार्क्सवाद के रूप में मानववाद का विचार दिखाई दिया। मानव के इसी भौतिक एवं सांसारिक जीवन को सुखमय एवं आनन्दमय बनाने के लिए विज्ञान का सहयोग प्राप्त करना और मानव की श्रेष्ठता को स्थापित करना मानववाद का प्रमुख उद्देश्य है।

मानवेन्द्र नाथ रॉय को मानववाद की प्राचीन परम्परागत अवधारणा स्वीकार नहीं थी। उनका मत था कि मानववाद एवं धर्म को मिला देने से मानववाद नष्ट हो जाता है। रॉय के अनुसार मनुष्य के ऊपर दैविक एवं धार्मिक सत्ता को स्वीकार करने का मतलब मानव को एवं उसकी स्वतंत्रता को संकीर्ण एवं संकुचित करना है। एम0एन0 रॉय ने मानववाद की प्राचीन मान्यताओं को समाप्त कर एक नवीन दृष्टिकोण अपनाया। उनके अनुसार नव मानववाद मानव के प्रादुर्भाव, उसके अतीत तथा उसकी वास्तविकता की खोज के साथ जीवन के मूलभूत अनुभवों पर आधारित किया गया। जीवशास्त्रीय प्रयोगों के आधार पर यह निष्कर्ष निकाला गया है कि नैतिकता, बुद्धि एवं विवेक मनुष्य की प्रकृति के जन्मजात गुण हैं। अपने इसी प्राकृतिक गुण के आधार पर वह अन्य मनुष्यों के साथ शान्ति एवं सह अस्तित्व का जीवन जीता है। नव मानववाद कोई अमूर्त दर्शन, सामाजिक दर्शन या मात्र राजनीतिक एवं आर्थिक सिद्धान्त ही नहीं है। यह उन सिद्धान्तों का संग्रह है जो मानव जीवन के सभी क्रिया–कलापों को उसके सामाजिक अस्तित्व से सम्बन्धित कर उसकी अनुभूति का मार्ग प्रशस्त करते हैं।

एम0एस0 रॉय का नव मानववाद इस बात पर विशेष बल देता है कि मनुष्य स्वयं अपने भाग्य का निर्माता है। मानव अपने विश्व का निर्माण स्वयं करके सतत विकास की ओर अग्रसर रह सकता है। मानव अस्तित्व को खतरा पैदा करने वाले निरन्तर संघर्षों तथा उससे प्राप्त होने वाले

PIF/3.007 *ASVS Reg. No. AZM 561/2013-14*

अनुभवों से ही नव मानववाद का जन्म होता है। अपने नव मानववाद के मूल उद्देश्यों पर प्रकाश डालते हुए एम0एन0 रॉय ने लिखा है कि मानव की राजनीतिक सामाजिक, आर्थिक, नैतिक एवं बौद्धिक जीवन की समस्याओं ने मानव को अपने भविष्य के लिए सोचने पर विवश किया है। यदि मनुष्य अपने लिए एक नवीन जीवन–दर्शन की रचना नहीं करता है तो अपने आपसे ही विश्वास खो देगा और सदा के लिए मार्गच्युत होकर पतन के गर्त में समा जायेगा। अतः सामाजिक ढाँचे का पुर्ननिर्माण मानव जीवन के सौदार्द्र के लिए होना चाहिए न कि संघर्ष एवं तनाव के लिए। इस दृष्टि से मानव का पुर्नमूल्यांकन, समाज का नव–निर्माण आदि नव मानववाद का मुख्य उद्देश्य है।

एम0एन0 रॉय ने नव मानववाद को मार्क्सवाद से अधिक वैज्ञानिक मानते हुए भी यह कहा कि यह मार्क्सवाद से पूरी तरह अछूता नहीं है। उनके अनुसार जब मार्क्स ने अपने सिद्धान्तों का प्रतिपादन किया था तब वैज्ञानिक दृष्टिकोण का समुचित विकास नहीं हुआ था। जबकि नव मानववाद मनोविज्ञान, अनुभव एवं जीवशास्त्रीय ज्ञान पर आधारित है, अतः यह मार्क्सवाद से अधिक प्रगतिशील एवं विकास परक है। नव मानववाद को अधिक वैज्ञानिक एवं तर्कशील सिद्ध करते हुए रॉय ने लिखा कि नव मानववाद में व्यक्ति की प्रमुखता केवल समाज में ही नहीं अपितु अखिल ब्रह्माण्ड में स्वीकार होनी चाहिए। इसमें समाज की रचना का आधार ही व्यक्ति को माना गया है। अच्छे व्यक्ति मिलकर ही अच्छे समाज का निर्माण कर सकते हैं। इसके विपरीत साम्यवाद एक अच्छे समाज के निर्माण को प्रमुखता देता है ताकि उसके माध्यम से अच्छे मनुष्यों का निर्माण हो सके। रॉय के अनुसार यह कहना कि पहले अच्छे समाज का निर्माण करके उसके माध्यम से अच्छे व्यक्ति बनाये जाय, उचित नहीं है।

एम0एन0 रॉय ने जिस नव मानववाद का प्रतिपादन किया है उसकी स्थापना प्रबुद्ध एवं शिक्षित जनता के माध्यम से ही हो सकती है। यदि इस नवमानववाद की ओर अग्रसर हुआ जाय तो व्यक्ति के राजनीतिक, सामाजिक, बौद्धिक, नैतिक एवं मानसिक आदि सभी पक्षों में आमूल चूल परिवर्तन हो सकता है। इस नव मानववाद में न तो राष्ट्रवाद को, न धर्म को, न वर्ण को और न ही जाति को कोई महत्व दिया गया है। इसका एकमात्र लक्ष्य केवल और केवल मानव है। यह विचारधारा केवल आध्यात्मिक एवं सामाजिक जीवन में ही नहीं अपितु राजनीतिक जीवन में एक नयी प्रेरणा एवं स्फूर्ति लेकर आई। रॉय का वैज्ञानिक दृष्टिकोण नव मानववाद के विकास में सहायक रहा और मानववाद को सम्पूर्ण विश्व के निर्माण के लिए अपरिहार्य माना।

शोध–पत्र का सारांश– मानवेन्द्र नाथ रॉय का सम्पूर्ण चिन्तन तर्क एवं वैज्ञानिक दृष्टिकोण पर आधारित है। उन्होंने धर्म से आवृत्त किसी भी दृष्टिकोण का समर्थन नहीं किया क्योंकि धर्म आस्था को प्रधान मानता है। उसमें तर्क की कोई गुंजाइश नहीं होती है। धर्म अनेक बार लोगों को अन्ध विश्वास एवं संकीर्णता की ओर ले जाता है। व्यक्ति अपनी मूलभूत समस्याओं का निदान न करके उसे अपनी नियति एवं भाग्य मान लेता है जो अनुचित है। यह अकर्मण्यता को बढ़ावा देने वाला विचार है। नव मानववाद में इसी को समाप्त करने का प्रयास है। नव मानववाद एक ऐसा चिन्तन प्रस्तुत करता है जिसमें मनुष्य की स्वतन्त्रता, विवेक और तर्क को प्रधानता दी गयी है। रॉय के अनुसार मानव की स्वतन्त्रता और उसका अपने विवेक पर विश्वास ही उसे सभ्यता की ओर बढ़ाने का कार्य करता है। एम0एन0रॉय का दृष्टिकोण पूरी तरह उदारवादी दिखाई पड़ता है क्योंकि उन्होंने नव मानववाद को कठोरता की

परिधि में न रखकर उसे बदलती परिस्थितियों के अनुरूप विकसित होने वाला सिद्धान्त बताया। संक्षेप में रॉय का विचार प्रकृतिवाद, भौतिकवाद एवं बुद्धिवाद का समन्वय दिखाई देता है।

संदर्भ ग्रन्थ सूची

1. एम0एन0 रॉय : रीजन, रोमेण्टीसिज्म एण्ड रिवोल्यूशन', खण्ड–1, रेनासां पब्लिकेशन, कलकत्ता, 1952, पृष्ठ–114
2. रेनांसा पब्लिकेशन, कलकत्ता, 1951, पृष्ठ–5
3. एम0एन0 रॉय : वही, पृष्ठ–56
4. एम0एन0 रॉय : 'पालिटिक्स, पावर एण्ड पार्टीज', रेनांसा पब्लिकेशन, कलकत्ता, 1960, पृष्ठ–30
5. बी0एल0 शर्मा : 'द पोलिटिकल फिलासफी ऑफ एम0एन0 रॉय, नेशनल पब्लिशिंग हाउस, दिल्ली, 1965, पृष्ठ–76
6. एम0एन0 रॉय : 'रेडिकल ह्यूमनिज्म', ओरिएण्ट प्रकाशन, दिल्ली, 1952, पृष्ठ–13–14
7. एम0एन0 रॉय : वही, पृष्ठ–18
8. एम0एन0 रॉय : 'न्यू ह्यूमनिज्म', ए मेनिफेस्टो, कलकत्ता, 1947, पृष्ठ–32

*****